Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 02/November/2023 IJRAW: 2023; 2(12):12-15 Accepted: 05/December/2023

सामाजिक जीवन में संगीत का प्रभाव (ताल वाद्य के संदर्भ में)

*[1]डॉ. जितेश गढ़पायले

*[1]सहायक प्राध्यापक, कथक नृत्य विभाग, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ, भारत।

सारांश

समाज की वाणी, हाव–भाव भंगिमाएँ, थिरकन एवं वादन की शाश्वत गाथा ही संगीत है। संगीत हमारी सांस्कृतिक निधि है जिसे सहेजकर रखना प्रत्येक नागरिक का मौलिक कर्तव्य है। संगीत वाचिक परम्परा का सशक्त साधन है जो सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आ रही है, ताल वाद्य प्रकृति की देन है। उनका मूल उसे प्रकृति प्रदत्त है। अतः ताल वाद्यों की उत्पत्ति एवं रचना ब्रह्मा की करताल, विष्णु का मृदंग आदि।

यदि हमारा संगीत विलुप्त हो गया तो निश्चित ही जनमानस अपनी यशस्वी परम्परा खो बैठेगा, जिसे पुनः अर्जित करना मानव जाति के लिये असम्भव नहीं तो जटिल अवश्य हो जायेगा। मधुर संगीत की ध्वनियों के श्रवण से शरीर की ग्रंथियाँ प्रभावित होती है जिसके सकारात्मक प्रभाव भी देखे गये है। संगीत एवं नृत्यों में ताल वाद्यों का शेष भारत के संगीत की तरह महत्वपूर्ण स्थान है। मानव जीवन का मूल आधार 'कर्म' है जहाँ एक ओर ताल वाद्य जीवन को उमंग और उत्साह से भर देते हैं वहीं दूसरी ओर सामाजिक जन शक्ति को एक सूत्र में पिरोये रखने का यह एक अच्छा माध्यम है। सामाजिक जीवन के मूल्य पूर्वजों की अमूल्य धरोहर है जिसमें जीवन, दर्शन, मिट्टी की महक, प्रकृति का सान्निध्य और सांस्कृतिक मूल्यों के तत्व स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

मुख्य शब्दः सामाजिक जीवन में संगीत, संगीत से व्यक्तित्व विकास, संगीत कला से लाभ, ताल वाद्य का उद्भव एवं प्रकृति से संबंध

प्रस्तावना

समाज की वाणी, हाव–भाव भंगिमाएँ, थिरकन एवं वादन की शाश्वत गाथा ही संगीत है। संगीत एक ऐसा अथाह सागर है जिसमें अवगाहन तो किया जा सकता है, किन्तु इसे पार करना वास्तव में असंभव है। संगीत के किसी भी विधा या अंश का प्रचलन संबंधी दावा करना सत्यता से परे है क्योंकि संगीत हमारी सांस्कृतिक निधि है जिसे सहेजकर रखना प्रत्येक नागरिक का मौलिक कर्तव्य है। संगीत वाचिक परम्परा का सशक्त साधन है जो सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आ रही है, किन्तु वर्तमान परिस्थिति में इसके संरक्षण एवं मौलिक रख–रखाव की महती आवश्यकता आ पड़ी है। प्रस्तुत शोध पत्र ऐसी ही आवश्यकता की पूर्ति का प्रयास है। प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ संगीत से युक्त एवं लयबद्ध है। सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी व ग्रह ये सभी अपनी धुरी पर एक लययुक्त गति से घुम रहे है जो कि सतत चलन का प्रमाण है। अतः कह सकते है कि संगीत में अद्भुत शक्ति, एक सशक्त आकर्षण है। टैगोर जी के अनुसार ''संगीत कितना 'मंत्र मुग्धकारी, कितना सुन्दर कितना आकर्षक, मनमोहक एवं हृदय को आकर्षित करने वाला ध्वनिमय भाव है। जिसके उच्चारण मात्र से हृदय में एक ऐसी सरस एवं मधुर सिहरन उठती है जो मन को आनन्द की अलकपुरी में ले जाती है। संगीत व्यक्ति के विकास की, जीवन शैली की मूल आधार शीला है। इसीलिए कहा गया है कि संगीत में अगर लय है, ताल है लेकिन स्वर नहीं है वह संगीत निष्क्रिय है। जिस तरह मानव शरीर का निर्माण पांच तत्वों से मिलकर हुआ है।

क्षिति जल पावन गगन समीरा।
पंच रहित यह अधम शरीरा।।

उसी तरह संगीत भी गायन, वादन एवं नृत्य तीनों विधा से मिलकर हुआ है। गीत वाद्यं, नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते।

उपरोक्त में से किसी की कमी होने से जीवन निराधार हो जाता है और यही पांच तत्व प्रकृति के आधार माने गये है। फलस्वरूप जड़ और चेतन की सृष्टि का अस्तित्व भी इन्हीं पर आधरित है। वैज्ञानिक आधार पर भी प्रकृति में संगीत चारों ओर विद्यमान है। अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि प्राणी मात्र की उत्पत्ति संगीत से युक्त वातावरण एवं तत्वों से परिपूर्ण होती है। स्वर आत्मा की ध्वनि है और आत्मा परमात्मा का स्वरूप है। अतः जिस प्रकार स्वर का सम्बन्ध आत्मा से है ठीक इसी प्रकार आत्मा का

*Corresponding Author: डॉ. जितेश गढ़पायले

सम्बन्ध परमात्मा से है जो कि सत्य है। सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्रिया कलापों, दैनिक दिनचर्या के प्रत्येक कार्यों में संगीत के होने का स्पष्ट प्रमाण मिलता है।

यदि हमारा संगीत विलुप्त हो गया तो निश्चित ही जनमानस अपनी यशस्वी परम्परा खो बैठेगा, जिसे पुनः अर्जित करना मानव जाति के लिये असम्भव नहीं तो जटिल अवश्य हो जायेगा ।

ताल वाद्य

ताल वाद्य प्रकृति की देन है। उनका मूल उसे प्रकृति प्रदत्त है। आकाश में जब बादल घुमड़ते हैं तो उनसे भिन्न–भिन्न प्रकार की ऊंची एवं गम्भीर आवाज होती है, उसी गंभीर एवं ऊंची आवाज की धुन से मांदर, ढोल, नगाड़े एवं मृदंग की रचना हुई है। जब मांदर, ढोल एवं मृदंग बजते हैं तो बादलों जैसी गर्जना होती है। बादल जब एक–दूसरे के पास आते हैं तो बिजली कड़कती है। टिमकी की उत्पत्ति का स्त्रोत यही कड़कड़ाहट है। ताल वाद्य में अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग लोक रचनाओं एवं शास्त्रीय रचनाओं के अनुसार ही होता है। संगीत शास्त्र में वाद्यों की परम्परा का चित्रण वहाँ की चित्रकला, लोक साहित्य और सामाजिक जीवन एवं रहन–सहन से ही प्राप्त होता है। लोक संगीत की गायन विधा में फाग गायन, आल्हा रसिया, राई गायन इत्यादि शामिल है। उनके ताल वाद्य के अवनद्ध वाद्यों में डफ, मृदंग, टिमकी, नंगाड़ा, चिमटा, करताल झींका इत्यादि लोक वाद्य बजाये जाते है।

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में उपलब्ध वर्णनों के अनुसार देवताओं ने भी ताल वाद्य को अपनाया है। इनके द्वारा देवताओं ने संसार को अलौकिक संगीत प्रदान किया है। अतः ताल वाद्यों की उत्पत्ति एवं रचना ब्रह्मा की करताल, विष्णु का मृदंग आदि। इन्हीं ग्रन्थों में एक कथा यह भी पायी जाती है कि एक बार भगवान शंकर ने त्रिपुर नामक एक दैत्य का वध किया। दैत्य के इस वध से शिव इतने अधिक प्रसन्न हुए कि वे प्रसन्नता को सम्हाल नहीं सके और नृत्य करने लगे। भगवान शिव को नृत्य में मग्न होते देख ब्रह्मा ने उसी राक्षस के रूधिर से मिट्टी सानकर एक ढोल की रचना कर दी और शिव पुत्र को ढोल बजाने का आदेश दिया और इस तरह ढोल की उत्पत्ति हुई। वाद्यों की इस उत्पत्ति की गाथा पर ध्यान से दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होता है कि ये प्राकृतिक एवं दैविक वाद्य ही ताल वाद्य है जो आज भी मानव जीवन में उसी नाम से प्रचलित है, जिनके अंग–अंग में प्रकृति का समावेश है। तात्पर्य यह है कि वाद्य प्रकृति प्रदत्त है जो देवताओं, दानवों एवं मानवों की आवश्यकतानुसार आदिकाल से आज तक उत्पन्न एवं निर्मित होते चले आ रहे हैं। सर्वविदित है कि संगीत के माध्यम से गंभीर से गंभीर रोगों का इलाज संभव है जो कि वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित है। जिस प्रकार बाँसुरी और शहनाई से निकली ध्वनियाँ, मनुष्य को सदा आकर्षित करती रही है ठीक उसी प्रकार इनका प्रभाव पशु–पक्षियों पर भी पड़ता है। इसके अलावा और अन्य कई प्रयोग है जो संगीत की महत्ता को सिद्ध करते है। मधुर संगीत की ध्वनियों के श्रवण से शरीर की ग्रंथियाँ प्रभावित होती है जिसके सकारात्मक प्रभाव भी देखे गये है। कहने का तात्पर्य यह है कि संगीत मनोभावों को व्यक्त करता है।

वाद्यों के मूल में प्रकृति प्रदत्त ध्वनि व्याप्त है। वाद्य सहज, स्वच्छन्द एवं लयगर्भित होते हैं। ताल वाद्यों के बुनियादी स्वर की ओर देखें तो ज्ञात होता है कि इन वाद्यों में प्रकृति की अन्तर्गूंज इनके कण–कण में व्याप्त है। यथा समुद्र का गंभीर स्वर, बादलों की गर्जना, शिशु का रूदन, पक्षी का कलरव, बिजली की कड़क, भौंरों की गुंजन, मेंढक की टर्र, मंदिर के शंख एवं घंटा की ध्वनियाँ यही सरल एवं स्वाभाविक स्वर ताल वाद्यों की आत्मा है। जीवन में यदि हम प्रसन्नता महसुस करते है तो स्वाभाविक है थोड़ा ऊँची आवाज में मस्ती से भरा संगीत सुनना अथवा नाच करना पसंद करते है वही दुख या कष्ट के समय कम आवाज में संगीत सुनना पसंद करते है जो की उदास मन की विरह अवस्था को दर्शाता है। अतः हम कह सकते है कि संगीत सुनने से तनाव कम होता है और मन में सकारात्मक भाव उत्पन्न होते है। संगीत का हमारे दिल पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। अगर व्यक्ति 20 मिनट मधुर संगीत सुने तो उसका ब्लड प्रेशर सर्कुलेशन सही होता है। व्यक्ति के जीवन से जुड़ी कई तकलीफे जैसे–डिप्रेशन, डिमेशिया, अनिद्रा, नकारात्मक भावनायें, सिर दर्द–तनाव, अशांति आदि में संगीत के धनात्मक प्रभाव और काफी फायदा पहुँचाता है। संगीत एवं नृत्यों में ताल वाद्यों का शेष भारत के संगीत की तरह महत्वपूर्ण स्थान है। ताल वाद्य वृन्दों की मिली–जुली भिन्न–भिन्न प्रकार की लय, ताल एवं ध्वनियों के सम्मिश्रण से जो स्फुटित गति उत्पन्न होती है वह नृत्य एवं संगीत को भव्यता एवं विलक्षणता प्रदान करती है। ताल वाद्य संगीत एवं नृत्य के प्राण है, उनकी जीवन शक्ति है। नर्तकों के पद संचालन की गति, गीतों के बोल तथा समयावधि आदि का नियंत्रण ताल वाद्य ही करते हैं। शास्त्रीय, सुगम संगीत की विभिन्न विधाओं ताल वाद्य के अर्न्तगत तबला प्रयोग में लाया जाता है। इसका वादन शास्त्रीय संगीत–गीत, गजल, भजन तथा विभिन्न गायन शैलियों के साथ व नृत्य में भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त लोकसंगीत में प्रयुक्त अन्य वाद्यों में एकतारा, चिकारा, रावणहत्या इत्यादि वाद्यों का प्रयोग खुलकर किया जाता है।

सामाजिक जीवन में ताल वाद्य

सामाजिक जीवन लोकसंगीत में तरह–तरह के विशिष्ट एवं लोक वाद्य बजाये जाते हैं। सम्पूर्ण प्रदेश में इन लोकवाद्यों के नाम, आकार–प्रकार, बनावट एवं भार आदि में कल्पनातीत भिन्नता होती है। संगीत ग्रंथों में ताल की परिभाषाएँ कई प्रकार से मिलती है। संगीत मकरन्द में कहा गया है कि काल का जो क्रियात्मक आवृत होने वाला खंड गीत, वाद्य और नृत्य जिसमें प्रतिष्ठित होते है वह ताल है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि संगीत क्रिया में जो समय व्यतीत होता है उसके माप को ताल

कहते है। अतः गणितीय रूप में कहा जा सकता है कि एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु को मिलाने वाली सरल रेखा उन बिन्दुओं के बीच की दूरी को प्रदर्शित करती है। सांस्कृतिक, सामाजिक, अंचल मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड मालवा एवं निमाड़ में लोकवाद्यों की अपनी आंचलिक पहचान है। आंचलिक, सामाजिक मान्यताओं, मूल्यों, लोक विश्वासों, रीति–रिवाजों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुसार ताल वाद्यों का निर्माण किया जाता है कहीं–कहीं अवसर विशेष पर इन वाद्यों की पूजा भी की जाती है। समाज, संस्कृति एवं कला की संरक्षक संस्था है जो अपने सौन्दर्य बोध कलात्मक रूझान और कला परम्परा में विविधता के लिये विख्यात है। प्रत्येक समाज की संस्कृति एक ऐसी घनी सांस्कृतिक बुनावट की संस्था है जिसकी निगरानी में युवाजनों को समाजीकृत किया जाता है। ताल वाद्यों के विकास–परम्परा पुरातन सभ्यताओं में वाद्ययंत्रों में पशुओं के सींग व उनके दांतों से सीटी आदि को बनाने व इस्तेमाल करने का उल्लेख मिलता है।

मानव जीवन का मूल आधार 'कर्म' है जहाँ एक ओर ताल वाद्य जीवन को उमंग और उत्साह से भर देते हैं वहीं दूसरी ओर सामाजिक जन शक्ति को एक सूत्र में पिरोये रखने का यह एक अच्छा माध्यम है। यह वह निधि है जहाँ थकी हुई जिंदगी के पैर नई जीवन चेतना के साथ थिरक उठते हैं। ताल वाद्यों में सम्मोहन, आकर्षण, बंधनमुक्त एवं एक सच्चे हृदय की पुकार का मर्म है जो कि सामाजिक उल्लास का प्रतीक है। विश्व की किसी भी प्राचीन सभ्यता में बाँसुरी, सिंग तथा डमरू जैसे वाद्य अवश्य मिलते है। देवी–देवताओं के वाद्य यंत्रों में अनेक संगीतमयी यंत्रों का उल्लेख मिलता है। इनमें कृष्ण की बाँसुरी, शिवजी का डमरू, सरस्वती की वीणा आदि का उल्लेख मिलता है। जो आज भी संगीत की ध्वनि व धुन के लिए लोकप्रिय है। रामायण तथा महाभारत काल मृदंग के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण काल है। प्रत्येक ताल वाद्य का प्रयोग विशेष अवसर मुख्य रूप से की जाती थी जो कि किसी सूचना या संदेश को समझने का एक साधन भी था। जैसे–भेरी तथा दुंदुभि जैसे ताल वाद्य शासकीय घोषणा को प्रसारित करने की सूचना देने के लिए बजाये जाते थे। वीण अन्तःपुर की राजस्त्रियों द्वारा बजाई जाती थी। वीणा और मृदंग को बजाने के लिए दण्ड का प्रयोग किया जाता था।

जिस तरह जन्म से लेकर मृत्यु तक सोलह संस्कार का किया जाना एक अच्छे कर्म का परिचायक होता है। इस प्रत्येक संस्कार के सम्पन्न कराने में ताल वाद्य की भूमिका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रही है इस सत्य को किसी भी प्रकार से नकारा नहीं जा सकता। सामाजिक जीवन और ताल वाद्य दो सांस्कृतिक धाराएँ हैं जो समाज को एकता, अखण्डता एवं सामूहिकता के पक्के सूत्र में बांधे हुए रखती है। सामाजिक जीवन के मूल्य पूर्वजों की अमूल्य धरोहर है जिसमें जीवन, दर्शन, मिट्टी की महक, प्रकृति का सान्निध्य और सांस्कृतिक मूल्यों के तत्व स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

निष्कर्ष

प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ संगीत से युक्त एवं लयबद्ध है। सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी व ग्रह ये सभी अपनी धुरी पर एक लययुक्त गति से घुम रहे है जो कि सतत चलन का प्रमाण है। अतः कह सकते है कि संगीत में अद्भुत शक्ति, एक सशक्त आकर्षण है। संगीत में अगर लय है, ताल है लेकिन स्वर नहीं है वह संगीत निष्क्रिय है। जिस तरह मानव शरीर का निर्माण पांच तत्वों से मिलकर हुआ है। ताल वाद्य में अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग लोक रचनाओं एवं शास्त्रीय रचनाओं के अनुसार ही होता है। संगीत शास्त्र में वाद्यों की परम्परा का चित्रण वहाँ की चित्रकला, लोक साहित्य और सामाजिक जीवन एवं रहन–सहन से ही प्राप्त होता है। लोक संगीत की गायन विधा में फाग गायन, आल्हा रसिया, राई गायन इत्त्यादि शामिल है। संगीत के माध्यम से गंभीर से गंभीर रोगों का इलाज संभव है जो कि वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित है। जिस प्रकार बाँसुरी और शहनाई से निकली ध्वनियाँ, मनुष्य को सदा आकर्षित करती रही है ठीक उसी प्रकार इनका प्रभाव पशु–पक्षियों पर भी पड़ता है। जीवन में यदि हम प्रसन्नता महसुस करते है तो स्वाभाविक है थोड़ा ऊँची आवाज में मस्ती से भरा संगीत सुनना अथवा नाच करना पसंद करते है वही दुख या कष्ट के समय कम आवाज में संगीत सुनना पसंद करते है जो की उदास मन की विरह अवस्था को दर्शाता है। अतः हम कह सकते है कि संगीत सुनने से तनाव कम होता है और मन में सकारात्मक भाव उत्त्पन्न होते है। संगीत का हमारे दिल पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। अगर व्यक्ति 20 मिनट मधुर संगीत सुने तो उसका ब्लड प्रेशर सर्कुलेशन सही होता है। व्यक्ति के जीवन से जुड़ी कई तकलीफे जैसे–डिप्रेशन, डिमेशिया, अनिद्रा, नकारात्मक भावनायें, सिर दर्द–तनाव, अशांति आदि में संगीत के धनात्मक प्रभाव और काफी फायदा पहुँचाता है। संगीत क्रिया में जो समय व्यतीत होता है उसके माप को ताल कहते है। अतः गणितीय रूप में कहा जा सकता है कि एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु को मिलाने वाली सरल रेखा उन बिन्दुओं के बीच की दूरी को प्रदर्शित करती है। सांस्कृतिक, सामाजिक, अंचल मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड मालवा एवं निमाड़ में लोकवाद्यों की अपनी आंचलिक पहचान है। आंचलिक, सामाजिक मान्यताओं, मूल्यों, लोक विश्वासों, रीति–रिवाजों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुसार ताल वाद्यों का निर्माण किया जाता है कहीं–कहीं अवसर विशेष पर इन वाद्यों की पूजा भी की जाती है। ताल वाद्यों में सम्मोहन, आकर्षण, बंधनमुक्त एवं एक सच्चे हृदय की पुकार का मर्म है जो कि सामाजिक उल्लास का प्रतीक है। विश्व की किसी भी प्राचीन सभ्यता में बाँसुरी, सिंग तथा डमरू जैसे वाद्य अवश्य मिलते है। प्रत्येक ताल वाद्य का प्रयोग विशेष अवसर मुख्य रूप से की जाती थी जो कि किसी सूचना या संदेश को समझने का एक साधन भी था। जैसे–भेरी तथा दुंदुभि जैसे ताल वाद्य शासकीय घोषणा को प्रसारित करने की सूचना देने के लिए बजाये जाते थे।

संदर्भ

1. ताल दर्शन मंजरी–रामनरेश राय।
2. ताल प्रकाश–भगवत शरण शर्मा।
3. ताल वाद्य शास्त्र–डॉ. मनोहर भालचन्द्र राव मरोठ।
4. भारतीय संगीत का इतिहास–उमेश जोशी।
5. भारतीय संगीत–प्रो. कृष्णराव गणेश मुले।
6. भारतीय संगीत का इतिहास– शरतचन्द्र पराजपे।
7. संगीत विशारद–बसंत पत्रिका।
8. संगीत दर्पण–पं. चतुर दामोदर।
9- भारतीय नाट्य परम्परा और अभिनय दर्पण–वाचस्पति गैरोला।
10- नाट्य शास्त्र–बाबुलाल शुक्ल शास्त्री।